SHRI AJIT SINGH: Unfortunately, there was a cyclone in Andhra Pradesh in 1993 and, after this, the awareness about this facility has increased amongst the farmers there. Now, it has been very successful there and it is quite widespread. Many farmers are availing of it. And, initially, Orissa did not take care of this problem. But, after some calamities took place there, there also, the awareness is growing. So, it is a quesition of spreading the awareness. The cost is not that much. Actually, many of the farmers do not really know that the scheme is available. We need to do more work on this aspect; we need to publicise it and make sure that everyone knows that this scheme is available. And, I am sure, once the farmers belonging to areas, which are prone to natural calamities such as drought and floods, know about it, more and more of them will avail of this scheme.

Railway freight Earnings

*465. SHRI RAJNATH SINGH SURYA': Will the Minister of RAILWAYS be pleased to stale:

(a) whether the rail revenue earned by freightage of grains came down during April-June this year;

(b) if so, the reasons therefor; and

(c) what is the position in this regard in respect of fertilizers?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI NITISH KUMAR): (a) to (c) A Statement is laid on the Table of the Sabha.

Statement

(a) No Sir,

(b) Does not arise.

(c) During the period, April-June, 2001 originating loading of fertilizers is higher than the corresponding period of previous year. However, there is a marginal decrease in the earnings due to shorter lead of offered traffic.

श्री राजनाथ सिंह 'सुर्य': सभापति महोदय, मंत्री जी ने अपने उत्तर के प्रथम भाग में यह कहा कि अप्रैल-जून के दौरान खाद्यान्न कि ढुलाई से अर्जित रेल राजस्व में कमी नहीं आई है, तो मैं मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि क्या बढ़ोत्तरी हुई है और यदि बढ़ोत्तरी हुई है तो कितनी बढ़ोत्तरी हुई है?

श्री नीतीश कुमार: महोदय, हमने प्रश्न के उत्तर में ही बताया है कि जहां तक ढुलाई का सवाल है, उसमें बढोत्तरी हुई है। जहां तक फूड ग्रेन का सवाल है, उससे आमदनी में वृद्धि हुई है लेकिन जहां तक फर्टिलाइज़र का सवाल है, उसमें ढुलाई में तो वृद्धि हुई है लेकिन आमदनी में थोड़ी कमी आई है और इस कमी का कारण देखे तो वह मुख्य रूप से यह दिखाई देता है कि जो लीड है उसमें कमी हुई है यानी कम दूरी की ढुलाई हुई है और उसके चलते आमदनी में कमी हुई है लेकिन ढुलाई बढ़ी है।

श्री राजनाथ सिंह,'सूर्य': मैने खाद्यान्न कि ढुलाई के बारे में पूछा था, अभी उर्वरक के बारे में पूरक प्रश्न मैंने नहीं पूछा हैं मैंने तो आपने जो कहा कि खाद्यान्न की ढुलाई में कमी नहीं आई है, उसके बारे में जानना चाहा है कि कमी नहीं आई है तो क्या बढ़ोत्तरी हुई हैं, केवल खाद्यान्न के बारे में?

श्री नीतीश कुमार: महोदय, खाद्यान्न का जहां तक सवाल है, पिछले साल अप्रैल और जून के बीच में 7.10 मिलियन टन खाद्यान्न कि ढुलाई हुई थी ओरिजिनेटिंग लोडिंगको मिलाकर और अप्रैल-जून 2001-2002 में 7.47 मिलियन टन की ढुलाई हुई। जहां तक रिवेन्यु अनिंग, आमदनी होने का सवाल है तो पिछले वर्ष इसी दौरान 392.90 करोड़ की आमदनी हुई थी और इस बार 408.94 करोड़ की आमदनी हुई है।

श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य': एक तो मंत्री जी यह जानकारी दे देंगे पहले अनुपूरक प्रश्न के संदर्भ में कि यह जो आमदनी बढ़ी है क्या यह केवल थोड़ी सी मात्रा बढ़ने के कारण हुई है या ढुलाई का किराया भी बढ़ने के कारण हुई है?

आपने प्रश्न के'ग'भाग के उत्तर में यह कहा है कि कम दूरी के लिए आपूर्ति करने के कारण उर्वरक के लदान से जो आमदनी होनी चाहिए थी उसमें कमी हुई है। तो मैं जानना चाहता हूं कि अधिक दूरी के लिए लदान क्यों नहीं हो रहा है और उसके क्या कारण हैं?

श्री नीतीश कुमार: रेलवे तो ट्रांसपोर्टर हैं, रेलवे से जिस भी माल की ढुलाई लोग कराना चाहेंगे, हम करेंगे। एक और जो सबसे बड़ी बात हुई हैं फूड ग्रेन के मामले में कि पहले ज्यादातर राज्यों में कमी थी और कुछ राज्यों में सरप्लस था उसके कारण एफ.सी.आई, की ढुलाई होती थी और प्रोइवेट ट्रेडर्स भी ढोते थे एक जगह से दूसरी जगह लेकिन अब स्थिति ऐसी उत्पन्न हुई है कि ज्यादातर राज्यों में पैदावार बढ़ी है उनमें आत्मनिर्भरता आ रही है यह भी एक कारण हो सकता है।

श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य': मेरा प्रश्न उर्वरक के बारे में था, खाद्यान्न के बारे में नहीं था।

श्री नीतीश कुमार: यह तो खाद्यान्न की ढुलाई के बारे में सवाल है।

श्री राजनाथ सिंह 'सूर्य': श्रीमन् प्रश्न के दो भाग हैं, आप खुद ही देख लें- एक खाद्यान्न के बारे में दूसरा उर्वरक के बारे में । आपने खाद्यान्न वाले भाग का जबाव दिया , वह तो ठीक था। उर्वरक बारे में आपने उत्तर में यह कहा कि कम दूरी के लए लदान होने के कारण उसकी आमदनी में कमी आई है मैने केवल इतना जानना चाहा था कि क उर्वरक का अधिक दूरी के लिए लदान क्यों नहीं हो रहा इसका क्या कारण हैं?

श्री नीतीश कुमार: इसका तो रेलवे के पास कोई उत्तर नहीं हैं,हमारे यहां जो ढुलाई करने के लिए आएगा, उसका ढुलाई करेंगे चाहे वह कम दूरी के लिए ले जाना चाहे या ज्यादा दूरी के लिए ले जाना चाहे।

श्रीमती चन्द्रकला पांडे: सभापति महोदय, माननीय मंत्री जी बहुत ही सक्षम हैं और अनेक विभागों की यात्रा के बाद उन्होंने फिर से इस विभाग का दायित्व संभाला है। मैं उनसे यह निवेदन करना चाहूंगी कि आपने तो"ना" में उत्तर दे दिया है लेकिन सर्वेक्षण रिपोर्ट और अन्य जानकारियां यह बताती हैं कि रेलवे कि क्रेडिबिलिटी कम हो रही और लोगों का विश्वास इसमें हट रहा है। अपने जो ढुलाई का किराया बढ़ाया है , इसके बाद लोगों की दिलचस्पी रोड फिक में ज्यादा हो गई है। महोदय, हमारे वैगनों कि हालत भी बहुत खराब है और वे अच्छी तरह से मैंटेन नहीं किए जा रहे हैं। रेलवे कि आर्थिक स्थिति भी काफी खराब है। मैंमाननीय मंत्री जी से यह पूछना चाहूंगी कि रेलवे द्वारा ढुलाई के प्रोसेस को आकर्षित बनाने के लिए आप कौन से कदम उठा रहे हैं?

श्री नीतीश कुमार: सभापति महोदय, रेलबे कि क्रेडिबिलिटी घटने का सवाल ही नहीं है। रेलवे तो पिझले वर्ष से ज्यादा है ढुलाई कर रही है और इसका फ्रेट टैफिक बढ़ रहा है जैसा कि आप जानते हैं इस प्लान के बारे में जो प्रोजेक्शन था यह 9 वें प्लान का टर्मिनल ईयर है, अंतिम वर्ष है, इसके प्रोजेक्शन था कि कुल फ्रेट टैफिक 525 मिलियन टन होगा लेकिन हम वहां तक नहीं पहुंच पाए हैं। महोदय, इस साल के बजट में इसके लिए 500 मिलियन टन का लक्ष्य रखा गया है और जो ट्रैंड है, उसके हिसाब से यह कह पाना मुश्किल है कि हम 500 मिलियन टन के लक्ष्य को प्राप्त कर लेंगे क्यों की आवोरऑल इकॉनमी की जो स्थिति होती है, उसका असर भी इस पर पड़ता है।

महोदय, जहां तक रेलवे का सवाल है रेलवे अधिक से अधिक ढुलाई के लिए तैयार है और रेलवे कि क्रेडिबिलिटि बढ़ी है। कम समय में हम माल पहुंचा रहे हैं, अनेक जगहों पर रिआयते दी गई है हम तेजी से माल कि ढुलाई कि दिशा में आगे बढ रहे हैं। अब तो सफल तौर पर यह प्रयोग भी किया जा चुका है कि पहले जो मालगाड़ीयों को रोककर दूसरी गाड़ीयों को प्रिसीडेंस दी जाती थी, अब उसकी आवश्यकता नहीं रहेगी। अब तो हम हाई स्पीड पर मालगाड़ियों को ले जाने का सफल परीक्षण कर चुके हैं । अब शायद इसकी नौबत नहीं आएगी और धीरे-धीरे मालगाड़ियों के ऊपर पैंसेंजर गाड़ियों कि प्रिसीडेंस कि जरूरत नहीं पड़ेगी। इस

तरह से अनेक कदम उठाए गए हैं ताकि एक जगह से दूसरी जगह माल पहुंचाने के समथ में कमी हो एक वैगन का हम जितना इस्तेमाल करते हैं, उसका टर्न-एराउंड भी घटा है । इस प्रकार हम अपनी ऐसेट्स का ज्यादा इस्तेमाल कर पा रहे हैं और जो रेल यूज़र्स हैं, उनकी सैटिस्फैक्शन भी पहले कि तुलना में बढ़ती है जा रही है इस प्रकार यह निरंतर आगे रहने कि प्रक्रिया है।

श्री नरेन्द्र मोहनः सभापति महोदय, इस प्रश्न का शीर्षक है "ढलाई से रेलवे की कमाई"। मैं आपके माध्यम से मंत्री जी से संज्ञान में यह बात लाना चाहूंगा कि कर्मचारी लागत में तेजी से वृद्धि होने के कारण रेलवे का संचालन व्यय बहुत अधिक बढ़ गया है और ढुलाई की लागत भी बढ़ गई है और मेरी जानकारी के मुताबिक उसके कारण ढुलाई का काम करने में रेलवे को घाटा हो रहा है। क्या यह बात सही है? ढुलाई से रेलवे को जो कमाई होनी है, उसके बारे में हमें जानकारी प्राप्त करनी है मै यह जानना चाहता हूं कि कम लागत है से ढुलाई करने के बाद भी आखिर रेसवे अपने ढुलाई के लक्ष्य को क्यों पूरा नहीं कर पा रहा हैं? इसमें कहां कठिनाई है, इसके बारे में बताइए। यदि आप विशेश रूप से खाद्यान्नों के संबंध में बता सकें, तो अति कृपा होगी।

श्री नीतीश कुमारः सभापति महोदय, जहां तक खाद्यान्नों कि ढुलाई का सवाल है, इस प्रकार से कई आइटम्स हैं जिसमें रेलवे लागत खर्च से भी कम रेट पर ढुलाई करती है और कुछ चीजें ऐसी है जिनमें लागत खर्च से ज्यादा से ज्यादा पर ढुलाई करती है। तो इस प्रकार से माल यातायात में जो आमदनी होती है, उससे एक तरफ कुछ खास इसेंशियल कमॉडिटीज़ के मूवमेंट में हम सब्सिडी देते हैं और दूसरी तरफ जो पैसेंजर बिजनैस है या दूसरा ट्रैफिक है जैसा पार्स आदी, उसक पर भी हम सब्सिडी देते हैं। इसलिए रेलवे कि मुख्य आमदनी माल के यातायात से ही होती है हमें जो भी लाभ होता है वहा माल कि ढुलाई के कारण ही होता है।

श्री सभापतिः प्रश्न संख्या 466, श्री राजीव रंजन सिंह "ललन" वे उपस्थित नहीं है । श्री कपिल सिब्बल। वे भी उपस्थित नहीं है अगला प्रश्न।

श्री रमा शंकर कौशिकः सभापति महोदय, यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है। बहुराष्ट्रीय कंपनियां हमारे किसानों के हितों को आघात पहुंचा रही है मैं आपसे निवेदन करता हूं कि यह प्रश्न ले लिया जाए।

श्री सभापतिः हम अगला प्रश्न ले चुके हैं । प्रश्न संख्या 467, श्री मुनव्वर हसन।

*466. [7/ie *questioners (Shri Rajiv Ranjan Singh 'Lalan' and Shri Kapil Sibal) were absent for answer vide page* 24 *infra.]*